गुरु नानक – सबद ३०

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ६

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
आदेसु तिसै आदेसु ॥
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

सार: प्रथाओं का अर्थ, उद्देश्य और मूल्य सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए अनुशासन के साधन मात्र हैं। हालाँकि, जब रस्मों को मिथकों और ख़ुराफ़ात से जोड़ दिया जाता है और धार्मिक पालन की प्राथमिक आवश्यकता बन जाते हैं, तब मन भयभीत हो जाता है। जिस कारण ये तर्क वाली सोच से दूर हो जाता और वह यह नहीं समझता कि सदगुण ही आत्मज्ञान को प्राप्त करने का प्राथमिक और एकमात्र स्रोत हैं।

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥
प्रतीकात्मक रूप से, संतोष को रिवायती कुंडल, विनम्रता को रस्मी भिक्षापात्र और प्रतिबिंब को शरीर पर राख का रस्मी लेप बनाएं।

खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
सृजन और विनाश पर चिंतन, मज़हबी पैबंद को ओढ़नी, विचारों की शुद्धता में विनम्रता जीवन का तरीका, और सच का विश्वास चलने की छड़ी बनाएं।

आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥
सारी सृष्टि को साथी प्राणियों के रूप में समझने से, मन दोहरेपन पर विजय प्राप्त करता है, जो दुनिया को जीतने के बराबर है।

आदेसु तिसै आदेसु ॥

प्रकृति की इच्छा का सम्मान करें यही सार्वभौमिक नियम है।

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

अनादि काल से स्रोत, दोषरहित, अनंत, सर्वव्यापी अदृश्य ऊर्जा एक ही मौलिक इकाई रही है। (२८)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि वास्तविकता को दोहरेपन के रूप में समझना हमारे कामों को नियंत्रित करने के लिए मन को प्रभावित करता है। इसलिए स्वयं और अपने परिवेश के प्रति जागरूक रहना आवश्यक है। जागरूक होना एक परिवर्तनकारी यात्रा है जो आत्म-संतुष्टि, सार्वभौमिक कल्याण की ओर ले जाती है। अगर हम अपने मन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, तो हम एकता को अपनाने के लिए सांसारिक भ्रम पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com